गया उसका हाल देख ही चुके हैं।

मोहन तेज-तेज कदमों से कमरे का चक्कर लगाता है।

सोहन सिगरेट उठाता है और जलाने को होता है।

मोहन : यह क्या कर रहे हो सोहन। कहीं पापा देख लें।

सोहन : (हसकर) मुझे लगता है बात सच है। (सिगरेट रख देता है।)

मोहन : क्या सच है ?

सोहन : इलाहाबाद वाली आंटी ने बताया था कि पापा ने आपको इतना मारा, इतना मारा...

मोहन : (चौंककर) चुप रहो तुम...।

सोहन सकपकाकर अपनी मेज पर आ बैठता है। शुभा खिड़की में दिखाई देती है।

शुभा : यह क्या हो रहा है। कौन जोर से बोल रहा है। पता है पापा की तबीयत आज बहुत नाजुक है...। सोहन, यह धुआं कैसा है यहां ?

सोहन : (विगलकर) धुं-आ-कै-सा-है-य-हां ?

शुभा : क्या तू अपनी जबान पर लगाम नहीं रख सकता...। और तुम इसे कुछ क्यों नहीं कहते मोहन, यह कैसे बोल रहा है।

मोहन : (अनमने) तुम जाकर अपना काम देखो। मैं यहां देख लूंगा।

शुभा : जरा वह गंगाजल और गीता दे देना मोहन।

मोहन रैक पर से गंगाजल और गीता उठाकर देता है।

मोहन : और कुछ ?

विभा : लेकिन, लेकिन। और दीदी को मरने दीजिये, आप शादी क्यों नहीं कर लेते ? यहां हर काम सीनियारिटी के हिसाब से होता है। रोशन भाई की याद आती है तो जो चाहता है जाकर पापा का—

मोहन : विभा !

विभा : भइया, पापा मर जायें तो सारे मकान का व्हाइटवाशिंग करवायेंगे कि उन्होंने जो जरासीम फैला रखे हैं उनका हम पर असर न हो।

मोहन : यह क्या बोल रही हो।

विभा : मैं एकदम बोर हो गयी हूं। छह महीने से यह चल रहा है कि पापा अपने फालिज को लिए बिस्तर पर पड़े हैं और हर दिन एक बार गंगाजली और गीता उनके सिरहाने जाती है। हर दिन लगता है आज आखिरी दिन है लेकिन इतनी सबी आयुरेखा लेकर आये हैं कि मुझे लगता है उनसे पहले तो मैं मर जाऊंगी।

शुभा सीढ़ियां उतरती हैं। सिलहूटी दिखती है।

मोहन : मुझे क्या लगता है विभा, पता है जैसे, किसी अखबार में पढ़ा था मैंने। एक पूरा परिवार किसी शहर में जाकर होटल का कमरा किराये से ले लेता है और फिर एक साथ जहर खाकर सब मर जाते हैं। लगता है जैसे पापा चाहते हैं कि हम सब—। यह पूरा घर मौत से पहले की सराय लगता है।

विभा : तो आप लोग मरिये, मैं भाग खड़ी होऊंगी। यह इसी देश में होता है कि बाप छाती पर सवार रहता है। आप ही बताइये भइया। पति के लिए कोई पत्नी मर जाये तो उसे सती कहते हैं, वतन के लिए कोई मर जाये तो उसे शहीद

शुभा : क्या देख रहे हो? आज मुझे मालूम हुआ कि तुम अपने पापा को हत्या करने पर तुले हो। तुम सब चाहते हो कि पापा मर जायें। तुम सब पापा को ज़हर दे रहे हो। रोशन ज़हर उस रात डिस्कोस लाया था। तुम्हारे पास ज़रूर होगा। मोहन ज़हर उनका क्या दवा देना चाहता है और विभा—

मोहन : अब चुप भी करो।

शुभा : छोड़ दो मुझे—। मैं यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकती!—

मोहन घबराकर बाहर दौड़ता है—

मोहन : विभा ओ विभा—मोहन ओ मोहन, शुभा को फिर वही दौरा नहीं पड़ जाये।—

(विक्षिप्त होकर) यह दवाई? पता नहीं यह दवाई है या क्या है? (रैक के पास जाकर एक शीशी तोड़ डालती है और ज़ोर से हँसती है) आज कितने दिन के बाद हंसी आई है मुझे। मैं शुभा हूं पापा शुभा, विभा नहीं। पापा, मुझे हंसने दो, मुझे ज़ोर से हंसने दो। (हंसी) पापा मैंने आपके चाकलेट खा लोगे ना, मैंने आपके बिस्किट खा लोगे ना लाल वाली। नई पीली वाली, नई कालीवाली, (आराम कुर्सी पर इस तरह हाथ फेरती है जैसे पापा वहां बैठे हों) मैं ...नी होकर पापा आपके पास रहूंगी। रोज आपके ...रण लगाऊँगी। पापा, मैं आपसे शादी करूंगी। बरात लेकर आना और मैं दुल्हन बनकर आपके साथ जाऊँगी। (खड़ी होकर गाने ...आयेगी बारात, रहूं दुखी सारी बात। (डरकर पीछे हटती है) और (सोफे पर गिर जाती है) अरे क्या छोड़ो मुझे। कौन हो तुम? यह

मोहन : दीदी का कुछ करना चाहिए भइया। यह बार-बार इन्हें मिरगी का दौरा पड़ना ठीक नहीं है।

मोहन : और उससे पहले हिस्टीरिया।

मोहन : अपने घर में एक ही बीमारी किसी को नहीं होती सबको, अलग होती है, पापा को पक्षाघात और रक्तचाप। दीदी को हिस्टीरिया और एपिलैप्सी। आपको—

मोहन : अब चुप भी रह—। और थोड़ा-सा पाउडर सुंघाना—

मोहन : क्यों नहीं हम सब लोग किसी साइकेट्रिस्ट के पास चले चलते।

मोहन : वह क्या करेगा ?

मोहन : बीमारी का कारण बतायेगा।

मोहन : तो क्या हमें कारण नहीं मालूम है ?

> शुभा हिलती है। दोनों भाई हाथ बाँधे आसपास खड़े हो जाते हैं…।

मोहन : आ रहा है होश, अब दो मिनट में ठीक हो जायेंगी दीदी—।

मोहन : (हाथ से इशारा कर) चुप ही रहना।—

> बजर एक बार बजती है। शुभा आँखें खोलती है और धीरे से उठ बैठती है।

शुभा : क्या हुआ ? अरे, तुम दोनों ऐसे क्यों खड़े हो। पापा की तबीयत तो ठीक है ना ?

मोहन : बिलकुल ठीक है।

शुभा : यह मैं यहां क्या कर रही थी मोहन ?

सोहन : वो—(कुछ सोचकर) आप पोछा लगा रही थीं कमरे का और पोछा लगाते-लगाते यहीं बैठ गयीं।

शुभा : अजीब बात है। पापा की दवाई का टाइम हो रहा होगा

मिस मैसी : (हंस देती है) आप मजेदार आदमी हैं मोहन बाबू, इन कपड़ों में नर्स हमेशा एक जैसी लगती है, यानी हमेशा नहाई हुई दिखायी देती है।

मोहन : मेरा मतलब यह था कि आप, क्या बोलते हैं उसको...वैसी लग रही हैं जैसे...(फिर फिजूल हंसी)

मिस मैसी : मेरा ख्याल है अगर आपकी बातें सुनती रहूं तो हो गया काम। हमारे नर्सिंग होम मे अगर आप जैसे दो-चार पेशेंट और आ जायें तो हम कुछ कर ही न पायें।

मोहन : लेकिन उससे रहेगी रौनक।

चलने को होती है और पापा के कमरे की तरफ बढ़ती है।

मिस मैसी : शुभा है ना ऊपर या पापा अकेले ही हैं ?

मोहन : वह अपने कमरे मे होगी। उसे आज दौरा पड़ गया था...। लेकिन मिस मैसी...

मिस मैसी हंसकर चली जाती है। मोहन बाहर जाने के लिए तैयार सिगरेट जलाता है।

: हर बार मैं मिस मैसी से यही कहता हूं कि आप ऐसी लगती हैं जैसे नहाकर आयी हैं और यह मतलब ही नहीं समझती लेकिन वह जो कह रही थी कि नर्स हमेशा नहाई हुई लगती है इसका क्या मतलब। जरा कहीं बैठकर सोचा जाये।

फिर शीशा और कंघी लेकर सोचता हुआ चला जाता है। मोहन जिधर गया था उधर से आता है। और साथ लाये हुए पोस्टर ठीक करता है। उस पर तीन-चार वाक्य लिखे हैं—'उप-

[illegible]

मोहन — [illegible] और आज [illegible] अपने बाप [illegible] हो अच्छा है। वहाँ कम-से कम डर तो नहीं रहता कि कोई देख लेगा या यह फिक्र तो नहीं रहती कि किसी की नाक तक धुआँ चला जायगा।

जाने लगता है कि आती हुई मिस मैंमी दिख जाती है।

मिस मैंमी — क्या हाल है मोहन बाबू आपके पापा के ?

मोहन — बस कृपा है।

मिस मैंमी — कृपा! मैं उनकी तबीयत के समाचार पूछ रही हूँ। अब ठीक हैं वे ?

मोहन — हाँ-हाँ! कृपा से मतलब भगवान की कृपा से ठीक हैं वे तो लेकिन—

मिस मैंमी — लेकिन, लेकिन क्या ?

मोहन — मैं यह कह रहा था कि आप आज नहाकर आयी हैं शायद—*(किंचित हँसी*

विभा : अब कारण मैं हो गयी।
अमित : क्या दीदी बीमार हैं ?
सोहन : आब्सेस्ड हैं।
विभा : किस बात से ?
विभा : फादर इमेज से—
अमित : समझा नहीं।
सोहन : तुम नहीं समझोगे अमित।
विभा : क्यों, अमित क्यों नहीं समझ सकता ?
सोहन : अच्छा समझाता हूं (अमित से) दीदी के सिर पर जिस तरह पापा सवार हैं वैसे हेमलेट के सिर भी बाप का भूत सवार नहीं होगा !—
अमित : लेकिन उससे क्या हुआ। मैंने देखा है दीदी पुराने विचारों में विश्वास रखती है और पापा की देखभाल करती हैं—।
विभा : उन्हें जब दौरा पड़ता है अमित तो उनके हंसने, रोने, गाने को देखकर दया आ जाती है। तुम नहीं जानते कि आब्सेशन कैसा जानलेवा है। वे क्या महसूस करती हैं जानते हो—शी फील्स जैसे पापा हेज रैप्ड हर। यह खयाल भयंकर यंत्रणा है और पापा इस बात को जानते भी नहीं हैं कि दीदी इतनी हिस्टीरिक हो गयी हैं। भयंकर प्रलाप और फिर मिरगी का दौरा—बंधी हुई दंतकड़ी, मुंह से निकलता झाग और भिची हुई मुट्ठियां।
त : पापा को क्यों नहीं बतलाया ?
न : पापा जिस दिन बिस्तर से लगे हैं उस दिन के बाद यह भी नहीं जानते कि सूरज उगा है या सूरज डूबा है। उन्हें अखबार नहीं दिखाया जाता कि खबर सुनकर उनका रक्तचाप बढ़ जायेगा। घर में क्या हो रहा है कौन आ रहा है, कौन जा रहा है, वे कुछ नहीं जानते। वे एक तारीख पर स्टाप

विभा : अब कारण मैं हो गयी।
अमित : क्या दीदी बीमार हैं
सोहन : आब्सेस्ड हैं।
विभा : किस बात से ?
विभा : फादर इमेज से—
अमित : समझा नहीं।
सोहन : तुम नहीं समझोगे अमित।
विभा : क्यों, अमित क्यों नहीं समझ सकता ?
सोहन : अच्छा समझाता हूं (अमित से) दीदी के सिर पर जिस तरह पापा सवार हैं वैसे हेमलेट के सिर भी बाप का भूत सवार नहीं होगा !—
अमित : लेकिन उससे क्या हुआ। मैंने देखा है दीदी पुराने विचारों में विश्वास रखती है और पापा की देखभाल करती हैं—।
विभा : उन्हें जब दौरा पड़ता है अमित तो उनके हसने, रोने, गाने को देखकर दया आ जाती है। तुम नहीं जानते कि आब्सेशन कैसा जानलेवा है। वे क्या महसूस करती है जानते हो—शी फील्स जैसे पापा हेज रैप्ड हर। यह खयाल भयंकर यंत्रणा है और पापा इस बात को जानते भी नहीं हैं कि दीदी इतनी हिस्टीरिक हो गयी है। भयंकर प्रलाप और फिर मिरगी का दौरा—बंधी हुई दतकड़ी, मुंह से निकलता झाग और भिंची हुई मुट्ठियां।
अमित : पापा को क्यों नहीं बतलाया ?
सोहन : पापा जिस दिन बिस्तर से लगे हैं उस दिन के बाद यह भी नहीं जानते कि सूरज उगा है या सूरज डूबा है। उन्हें अब बार नहीं दिखाया जाता कि खबर सुनकर उनका रक्तचाप बढ़ जायेगा। घर में क्या हो रहा है कौन आ रहा है, कौ जा रहा है, वे कुछ नहीं जानते। वे एक तारीख पर स्ता

अमित : एक तो दादी ने यह बनवाने के लिए कहा था (रैपर में से स्टोन स्लैब निकालकर दिखाता है) पितृस्मृति। दादी ने कहा है कि इस कोठी का नाम पापा की स्मृति में होगा। वे इसे बाहर मकान के ऊपर लगवाना चाहती हैं।

मोहन : (उसे अलग रखते हुए) अपनी इस बात में कोई रुचि नहीं अमित। इस घर को बाप की याद का मकबरा बनाना है तो शौक से बनायें ये लोग। वैसे इस घर की परंपरा यह रही कि यह किसी न किसी का मकबरा ही बना रहता है। एक ओर रोशन भइया की घटना है और दूसरी ओर

छोटी सी यह तिथा-भक्ति।

अमित : और यह काम मोहन भइया ने सौंपा था वह भी मैंने कर दिया।

एक कागज निकालकर देता है। सोहन उसे लेने की बजाय इशारे से पूछता है यह क्या है?

: यह पापा के बारे में आबिचुरी है (पढ़ता है) 'मुरारीलाल शर्मा का जन्म उसी साल हुआ जिस साल हमारे स्वर्गीय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री जन्मे थे।—'

सोहन : और मृत्यु के बारे में कुछ लिखा है।

अमित : (उसकी तरफ देखकर) 'आप अपने कस्बे के सफल वकील बने। महात्मा गांधी का आवाहन सुनकर आपने वकीली का पेशा छोड़ दिया—'

सोहन : और कालाबाजारी करने लगे।

अमित : 'लेकिन उससे पहले अंग्रेज बहादुर उनसे खुश हुए थे और राय बहादुर का खिताब दिया था।'

सोहन : (हंस देता है) कमाल के काबिल रहे हैं पापा। एक जमाने में अंग्रेजों से राय बहादुर मिला दूसरे जमाने में कांग्रेस से पद्मश्री मिली। कोई मौका नहीं चूके—

अमित : 'आपकी पांच संतान हैं—'

सोहन : एक से एक बीमार, एक से एक घटिया।

अमित उसकी तरफ पढ़ना रोककर देखता है। सोहन उसके कंधे पर हाथ रख देता है।

सोहन : और पापा के नाम से पहले विशेषण कौन-सा अच्छा लगेगा? लोकमान्य मुरारीलाल या महात्मा मुरारीलाल। मेरा ख्याल है महात्मा ठीक रहेगा, महात्मा गांधी की टक्कर

सोहन : (रुककर) परेशान होने की कोई बात नहीं अमित । जब भी मस्जिद की बजाय पहले घर में दिया जलाने को बात आती है । इस घर का चेहरा तन जाता है क्योंकि रोशन वह कोशिश कर चुका है ।

चला जाता है ।

अमित : लेकिन विभा, सोहन क्या कह रहा है ?

विभा : उसके दिमाग में क्रांति भरी हुई है। तोड़ना-फोड़ना उसके नेचर में है और जबसे पापा ने चारपाई पकड़ी है। वह दिन-ब-दिन उग्र होता जा रहा है। ही वाट्स टू डिसओन फादर ।

अमित : यह हो कैसे सकता है लेकिन । पिता चाहे तो पुत्र को उत्तराधिकार न दे और वह यह घोषित भी कर सकता है कि यह मेरा बेटा नहीं है लेकिन कोई बेटा यह कैसे कह सकता है कि मैं इसे अपना पिता ही नहीं मानता ।

विभा : तुम फिर फिलासफर हो गये । छोड़ो पिता को हम उससे पहले ही परेशान हैं। पास आओ न अमित…

अमित : लेकिन तुम लोग इस घर को बदलते क्यों नहीं। व्हाई डोंच्यू ब्रिंग रिवोल्यूशन इन योर व्हेरी होम ।

विभा : जिस घर की फूड हैबिट्स नहीं बदल सकतीं, वहां क्या खाक रिवोल्यूशन आयेगा। तुम और कोई बात करो अमित ।

अमित : अब मुझे डर लगने लगा है…

विभा अमित से लिपट जाती है।

विभा : अमित ।

अमित : विभा।

विभा : बस किसी दिन इसी तरह पापा के सामने जाकर खड़े हो जायेंगे और वह हमारा फैसला होगा…

घुसता है। सहसा बिजली जोर से
चमकती है और बादलों की आवाज
तेज हो जाती है।

रोशन और सोहन बिलकुल एक जैसे लगते हैं। अब सोहन ने रोशन की याद में ही चुग्गी दाढ़ी उगाई है। उफ् अमित···

जोर से बिजली चमकती है और
प्रकाश रोशन के ऊपर फैलता है।
वह कदम-कदम आगे बढ़ता है और
कुर्सी को फोल्ड करता है।

रोशन : (चीखकर) अब कहां चले गये तुम सब लोग ? आप समझते हैं पापा कि इस तरह ऊपर अपने कमरे में चले जाने से सारी समस्या हल हो जायेगी लेकिन सुन लीजिये कान खोलकर कि यह ऐसा नहीं होगा। आपको कोई अधिकार नहीं कि मेरे बीच में आयें। (टहलता है) एक जरा-सी बात है कि मैं अपनी पसंद से शादी करना चाहता हूं। मैं जहां रहता हूं वहां कोई मुझसे प्यार करती है। यह मत समझिये कि आपसे पूछ रहा हूं तो आपके आशीर्वाद से ही जीवन ढोऊंगा। आप घर के बड़े हैं और मैं समझता रहा कि आपके मन को किसी भी तरह दुखाना ठीक नहीं है। (ऊपर सीढ़ियों पर स्विच आन होता है) आ रहे हैं ? आइये ना उतरकर। मुझसे आमने-सामने बात कीजिये। एक टेलीफोन उस लड़की के बाप को करके आप समझते हैं कि मेरा रास्ता रोक दिया। मैं नहीं हूं मोहन भैया-जैसा, जिसे सिर उठाने के लिए आप खत्म कर दें। आप रिस्पां-
इम सबके लिए··· (कुर्सी जहां की तहां रखता
है) रही आपकी कुर्सी अभी तो रख देता हूं

(अपना हैट उतारकर टांग देता है) बस भाग गये ना तुम दबाकर। सो गये ऊपर जाकर। कर दिया अपने सब बच्चों को कैद अपने उल्लूपन की गिरफ्त में। मैं आपको अपना पिता समझता हूं पापा लेकिन आप पर थूकता हूं···
(रोशन जिधर से आया था उधर ही लौट जाता है। ऊपर का स्विच कई बार जलता-बुझता है और सामान्य प्रकाश लौट आता है। मोहन उतरकर आता है तो अमित जाता हुआ दिखाई देता है।)

विभा : अच्छा, बाई अमित···कल मिलेंगे···

मोहन . अरे अमित, जा रहे हो क्या ?

अमित लौट जाता है और मोहन को नमस्कार करता है।

अमित . नमस्कार भाई साहब, क्या हाल है ?

मोहन : तुम सुनाओ। मैं पापा के पास था। शुभा अपने भगवान का ध्यान कर रही है सो वहां बैठने की ड्यूटी लगा दी।

विभा : लेकिन वहां तो नर्स है न ? वह मसाज कर रही होगी।

मोहन : हां मसाज तो कर रही है लेकिन कभी किसी चीज की जरूरत ही पड़ जाये (बात बदलकर) और भई वह जो मैंने लिखने को दिया था।

अमित : वह मैंने विभा को लिखकर दे दिया है। और दीदी ने जो स्लैब बनाने के लिए कहा था, वह काम भी कर दिया है···। रहा पापा का पोर्ट्रेट जो कमरे के बीचोंबीच उनके स्वर्गवास के बाद लगाना चाहते हैं तो वह बाद में बन जायेगा।

मोहन : ठीक है, ठीक है। मैंने इस विभा से कहा भी था कि अमित भाई मिलें तो (विभा चौंकती है) काम की याद दिलाना। यहां तो पापा की बीमारी से हम लोग हमेशा परेशान

लगायेंगे। उन्हें दोदी ने यह अब तक नहीं बतलाया है कि रोशन का पता नहीं है।

मोहन : वे तो उसे डिसओन कर चुके हैं।

सोहन : तो मैं भी डिसओन हो जाऊंगा। जो रोशन को डिसओन करे वह नालायक आदमी है।

मोहन : चुप भी रह यार। फिजूल में क्यों साला झमेला पैदा करता है। और कहीं शुभा को फिर से दौरा पड़ गया तो…

सोहन : शुभा को दौरा पड़ जायेगा। आपको उबकाई आ जायेगी पापा का रक्तचाप बढ़ जायेगा।…हुह।…

चीजें समेटकर चलने को होता है।

मोहन : (पुकारकर) अरे सोहन।

सोहन : अब क्या रह गया है?

मोहन : पूछ रहा था कब तक लौट आयेगा?

सोहन : जब काम खत्म हो जायेगा।

मोहन : लेकिन फिर भी।

सोहन . (गुस्से में मोहन की तरफ देखता है।)

मोहन . अच्छा, अच्छा जाओ। यहां तो किसी से कुछ पूछने का ही धर्म नहीं है। पापा आंखें निकालकर देख लेते थे तो बच्चू पाजामा खराब कर देते थे। और अब एक बात पूछ ली…

सोहन (जाते हुए रुककर) अब भी मुझसे ही कुछ कहा जा रहा है?

मोहन : नहीं। तुमसे, और किसी से भी कुछ कहना नहीं है।

विभा आती है और मेज पर कुछ ढूंढती है।

विभा : वह सोहन, आज तो कोई मीटिंग होने वाली थी दरबारे-

इट इज, कुछ समझे।

() बट दिस मोस्ट फाउल, स्ट्रेंज एंड अननेचुरल विभा···

विभा : अब चुप भी रह मार। (**विभा सोहन के मुंह पर हाथ रख देती है।**)

मोहन : लेकिन यह मामला क्या है विभा। अपने घर में तो चींटी नहीं मारी जाती वहां मर्डर क्या हो सकता है।

विभा : बिलकुल नहीं हो सकता भैया। और इस घर में जिस तरह मर्डर नहीं हो सकता, जन्म भी नहीं हो सकता और जो होता है दिखाई नहीं देता।

मोहन : (**गंभीर होकर**) क्या, क्या मतलब है ?···

विभा : मतलब यही कि···

सोहन : (**बीच में आकर**) चुप्प रहो। विभा का मतलब यह है भैया कि हम लोग पापा के बीमार होने से जन्म तिथियां नहीं मना पा रहे हैं। इसकी बिचारी की सालगिरह चुपचाप चली गई ना, घर में कुछ भी तो नहीं कर पाये हम। यह बेचारी मारे दुख के बगाली मार्केट जाकर अमित के साथ खाली गोलगप्पे ही खा सकी···।

विभा सोहन को मारने दौड़ती है, वह मोहन के पीछे आ जाता है।

विभा : बोलना फिर से बोलना तू···

तीनों के चेहरे पर एक अनायास प्रसन्नता और खुशी तैरने लगती है। तीनों हंसने लगते हैं इस पकड़भाग में।

मोहन : अभी एक मिनट पहले तुम भूत बन गये थे और अब जरा-से बच्चे बन गये हो। रुको तो सोहन, मानो भी विभा···

खुशी कमरे में तैरने लगती है और

सीढ़ियों पर शुभा की सिलहूटी दिखाई देती है।

सोहन : फिर तो भइया मैं भी चला।

मोहन : कब वापिस आयेगा ?

सोहन : फिर वही। इस बात को लेकर ही तो हम झगड़े थे ना—

सोहन जाने को होता है कि शुभा हाथ में कुछ कागज लिए आ जाती है।

शुभा : (सोहन को जाता देखकर) रुको सोहन।

रुक जाता है।

सोहन : कोई काम है क्या ?

शुभा : (बैठकर) हां। सवेरे से तुम लोग जिसे टाल रहे हो वही काम है।

सोहन : लेकिन दीदी मुझे कोई हिस्सा नहीं चाहिये—

शुभा : हिस्से की बात अभी आयी ही नहीं। लेकिन पिता के लिए तुम्हारे कुछ कर्तव्य तो हैं ना—।

सोहन : कहीं दस्तखत करना है क्या ? लाइये कर दूं—

मोहन : भले आदमी, दो मिनट रुक जा ना—

सोहन : लीजिये, यह रुक गया—

शुभा : जरा विभा को भी बुला ले—।

सोहन विभा को पुकारता हुआ अंदर जाता है।

शुभा : (मोहन को हाथ बांधे खड़ा देखकर) ऐसे क्यों खड़े हो ?

मोहन : (पीछे बंधे हाथ छोड़कर) लो।

: यह चेहरा ऐसा क्यों बना रखा है ? तुम तो मोहन घर के बड़े बेटे हो सब कुछ तुम ही को संभालना है।

मोहन : ऐसा कैसे हो सकता है। उससे पहले तो दीदी—

सोहन : सॉरी। भूल ही गया था—

एक क्षण का मौन। सोहन उठकर टहलने लगता है।

शुभा : एक बात और है। तुम सब जानते हो कि पापा ब्राह्मणों के सारे कर्म-कांडो में विश्वास करते हैं। वे चाहते हैं कि अंतिम क्रिया-कर्म गया, बनारस या हरिद्वार जाकर किया जाये—।

सोहन . ठीक है। इस बहाने घूमना हो जायेगा, मेरी विंटर वेकेशन हो ही रही है—

मोहन : क्या बक रहा है सोहन तू—। क्रियाकर्म मरने के बाद किया जाता है, क्या उसकी पहले से कोई तारीख सोची जाती है—।

सोहन : फिर सॉरी—। अब चलूं दीदी—?

शुभा : एक बात और। तुम लोग जानते हो कि तर्पण के समय पिता के लिए अपने जीवन की एक किसी सबसे प्रिय वस्तु को छोड़ दिया जाता है। उसका त्याग पिता की आत्मा को शांति देता है, उससे पितृ तिर जाते है—।

सोहन और मोहन एक दूसरे की तरफ देखते हैं।

: पहले मैं अपनी बतला रही हूं। मैं सारे समय दवाइयों पर जीवित हूं। पापा की याद में मैं सारी दवाइयां छोड़ रही हूं—। मैं अब कभी कोई दवाई छुऊंगी नहीं—

सोहन सहसा ताली बजा देता है।

सोहन : ग्रेट कितना बड़ा त्याग है दीदी—। हां भइया, बोलिये, आप क्या छोड़ रहे हैं—?

मोहन : (तय नहीं कर पाता) समझ नहीं पड़ रहा है—

समायेंगे। उन्हें दीदी ने यह अब तक नहीं बतलाया है कि रोशन का पता नहीं है।

मोहन : वे तो उसे डिसओन कर चुके हैं।

सोहन : तो मैं भी डिसओन हो जाऊंगा। जो रोशन को डिसओन करे वह नालायक आदमी है।

मोहन : चुप भी रह यार। फिजूल में क्यों साला झमेला पैदा करता है। और कहीं शुभा को फिर से दौरा पड़ गया तो···

सोहन . शुभा को दौरा पड़ जायेगा। आपको उबकाई आ जायेगी पापा का रक्तचाप बढ़ जायेगा।···हुह।···

चीजें समेटकर चलने को होता है।

मोहन : (पुकारकर) अरे सोहन।

सोहन : अब क्या रह गया है ?

मोहन : पूछ रहा था कब तक लौट आयेगा ?

सोहन : जब काम खत्म हो जायेगा।

मोहन : लेकिन फिर भी।

सोहन : (गुस्से में मोहन की तरफ देखता है।)

मोहन . अच्छा, अच्छा जाओ। यहां तो किसी से कुछ पूछने का ही धर्म नहीं है। पापा आखें निकालकर देख लेते थे तो बच्चू ... कर देते थे। और अब एक बात पूछ ली···

[illegible] ...(झकर) अब भी मुझसे ही कहा कहा जा रहा

हट दिस मोरट फाउल, स्टुपिड एंड मनरेसुरस विभा···

विभा : अब चुप भी रह मार। (विभा मोहन के मुंह पर हाथ रख देती है।)

मोहन : लेकिन यह मामला क्या है विभा। अपने घर में तो चींटी नहीं मारी जाती वहां मर्डर क्या हो सकता है।

विभा : बिल्कुल नहीं हो सकता भैया। और इस घर में जिस तरह मर्डर नहीं हो सकता, जन्म भी नहीं हो सकता और जो होता है दिखाई नहीं देता।

मोहन : (गंभीर होकर) क्या, क्या मतलब है ?···

विभा : मतलब यही कि···

मोहन : (बीच में आकर) चुप रहो। विभा का मतलब यह भैया कि हम लोग पापा के बीमार होने से जन्म तिथि नहीं मना पा रहे हैं। इसकी बिचारी की सालगिरह चुपचाप चली गई ना, घर में कुछ भी तो नहीं कर पाये हम यह बेचारी मारे दुख के बगाली मार्केट जाकर अमित साथ चाची गोलगप्पे ही खा सकी···।

विभा मोहन को मारने दौड़ती वह मोहन के पीछे आ जाता है।

विभा : बोलना फिर से बोलना तू···

तीनों के चेहरे पर एक अनाय और खुशी तैरने लगती। ~ लगते हैं इस एकदम

~ बन गये थे और अब ज~ मोहन, मानो भी विभा···

सीढ़ियों पर शुभा की सिलहुटी दिखाई देती है।

सोहन : फिर तो भइया मैं भी चला।

मोहन : कब वापिस आयेगा ?

सोहन . फिर वही। इस बात को लेकर ही तो हम झगड़े था ना—

सोहन जाने को होता है कि शुभा हाथ में कुछ कागज लिए आ जाती है।

शुभा : (सोहन को जाता देखकर) रुको सोहन।

रुक जाता है।

मोहन : कोई काम है क्या ?

शुभा : (बैठकर) हां। सबेरे से तुम लोग जिसे टाल रहे हो वही काम है।

सोहन · लेकिन दीदी मुझे कोई हिस्सा नहीं चाहिये—

शुभा : हिस्से की बात अभी आयी ही नहीं। लेकिन पिता के लिए तुम्हारे कुछ कर्तव्य तो हैं ना—।

सोहन : कहीं दस्तखत करना है क्या ? लाइये कर दू—

मोहन . भले आदमी, दो मिनट रुक जा ना—

सोहन · लीजिये, यह रुक गया—

शुभा : जरा विभा को भी बुला ले—।

सोहन विभा को पुकारता हुआ अंदर जाता है।

शुभा : (मोहन को हाथ बांधे खड़ा देखकर) ऐसे क्यों खड़े हो ?

मोहन : (पीछे बंधे हाथ छोड़कर) लो।

शुभा : यह चेहरा ऐसा क्यों बना रखा है ? तुम तो मोहन घर के बड़े बेटे हो सब कुछ तुम ही को सभालना है।

मोहन : ऐसा कैसे हो सकता है। उससे पहले तो दीदी—
सोहन : सॉरी। भूल ही गया था—

एक क्षण का मौन। सोहन उठकर टहलने लगता है।

शुभा : एक बात और है। तुम सब जानते हो कि पापा ब्राह्मणो के सारे कर्म-काडो मे विश्वास करते हैं। वे चाहते हैं कि अंतिम क्रिया-कर्म गया, बनारस या हरिद्वार जाकर किया जाये—।

सोहन : ठीक है। इस बहाने घूमना हो जायेगा, मेरी विंटर वेकेशन हो ही रही है—

मोहन : क्या बक रहा है सोहन तू—। क्रियाकर्म मरने के बाद किया जाता है, क्या उसकी पहले से कोई तारीख सोची जाती है—।

सोहन : फिर सॉरी—। अब चलू दीदी—?

शुभा : एक बात और। तुम लोग जानते हो कि तर्पण के समय पिता के लिए अपने जीवन की एक किसी सबसे प्रिय वस्तु को छोड़ दिया जाता है। उसका त्याग पिता की आत्मा को शांति देता है, उससे पितृ तिर जाते है—।

सोहन और मोहन एक दूसरे की तरफ देखते हैं।

: पहले मैं अपनी बतला रही हू। मैं सारे समय दवाइयो पर जीवित हू। पापा की याद में मैं सारी दवाइया छोड़ रही हूं—। मैं अब कभी कोई दवाई छुऊँगी नहीं—

सोहन सहसा ताली बजा देता है।

सोहन : ग्रेट कितना बड़ा त्याग है दीदी—। हा भइया, बोलिये, आप क्या छोड़ रहे हैं—?

मोहन : (तय नहीं कर पाता) समझ नही पड़ रहा है—

मोहन (विभा को सोचते देखकर) जल्दी मन करो। बात ये है कि जो सबसे प्रिय वस्तु होगी उसे पापा की स्मृति में उनकी मृत्यु के बाद छोड़ देना होगा यानी उसका त्याग कर देना होगा—जैसे अपने भइया सिगरेट छोड़ रहे हैं—(मोहन एकदम सिगरेट जेब में रख लेता है।)

मोहन लेकिन यह तो पापा न—(सोहन-विभा हंस देते हैं) अब तुम दोनों मेरी टांग खींचोगे।—ओह, मुझे तो वह नोटिस के मिल करवाना जाना है।

मोहन बाहर चला जाता है। जाते-जाते सिगरेट फिर जेब से निकाल लेता है।

मोहन सुन लिया विभा। संभाल के रखना जो तुझे अच्छा लगता हो, नहीं तो उसी से पापा का तर्पण करना होगा—।

विभा (विराम के बाद) एक काम करें मोहन।

सोहन गो अहेड।

विभा इस घर को कहीं गिरवी रख दें या बेच दें और आधा-आधा रुपया हम दोनों बांट लें।

मोहन पचेगा नहीं विभा—।

विभा एक लतीफा सुना है तूने।

सोहन कौन-सा—?

विभा इस दिन में जिस तरह की हिदायतें दी जा रही हैं उ डर लग रहा है मुझे—।

सोहन (अपने में व्यस्त उसकी तरफ देखता है)

विभा एक बाप था। बेहद नीच। उसके कई बेटे-बेटी थ। म लो चार-पांच थे। वह सबको बेहद तंग करता था। अ बाप की तरह ही वह एक दिन बिस्तर से जा लगा। उ लग गया कि वह अब मर जायेगा। उसने अपनी संतान

बुलाकर कहा—मैंने तुम्हें बहुत तकलीफ दी है लेकिन अब मेरा अंत समय आ गया है और मैं शांति से मरने के लिए, चाहता हूं कि मृत्यु के बाद तुम सब मेरे शरीर में एक-एक चाकू घोंप दो…।

सोहन : और पापा की आत्मा की शांति के लिए संतान ने वैसा ही किया।

विभा : नहीं, जब वह चाकू घोंप रहे थे तभी पुलिस आ गयी क्योंकि वह मरने से पहले पुलिस को रिपोर्ट कर चुका था कि मेरे बच्चे मुझे चाकू से मार डालने की साजिश कर रहे हैं।

सोहन : डर लगता है सोहन कि कहीं पापा भी ऐसी ही कोई इच्छा प्रकट नहीं कर दें।

(विराम)

विभा : आओ सोहन। पापा दूसरा पार्ट लिखवायें उससे पहले हम भी उनसे बात कर देखें…कम।

विभा सीढ़ियां चढ़ती है। ऊपर से ही सोहन को फिर आवाज लगाती है।

: कम, सोहन कम।

सोहन भी ऊपर जाता है और दूसरे ही मिनट जीने से एक जोर की 'नहीं' (शुभा) सुनाई देती है। तेजी से उतरकर विभा और सोहन नीचे आते हैं उनके पीछे-पीछे आती है शुभा।

विभा : आखिर आप चाहती क्या हैं दीदी ?

शुभा : मैं पूछ रही हूं, तुम क्या चाहती हो…?

विभा : मैं चाहती हूं कि पापा को जमीन पर उतार दिया जाये।

कमरे का चक्कर लगाती है और अपनी मुट्ठियां टकरा लेती है।

: यह कैसी हालत है आखिर कि हम मुह से एक शब्द नहीं बोल सकते ··हम अपनी इच्छा का उजेरा नही कर सकते, हम अपनी पसद का सगीत नहीं सुन सकते। प्याज का छौंक नहीं लगा सकते, कमरे की एक कील को इधर-से-उधर नहीं हटा सकते···

कमरे में एक मिनट के लिए मारक सन्नाटा घिर जाता है। दिमा अंदर चली जाती है। प्रकाश धुंधला होने लगता है और टेलीफोन की घंटी बजती है। ऊपर से उतरकर आती है मिस मैसी।

स मैसी . (बजते टेलीफोन को देखकर) क्या, कोई नहीं है यहा। हमेशा अजीब हाल बना रहता है इस घर का, जैसे लोग घर छोडकर ही चले गये हो। (टेलीफोन उठाती है) हलो।···जी हा, यह मुरारीलाल शर्मा का ही टेलीफोन है।···हा वे तो बीमार हैं पर क्या पूछना है।···हां हा।··· अभी नहीं मरे हैं।···ये नहीं पता कि कब मरेंगे··· (उधर चोगा रख दिया जाता है) अजीब हाल है। लोग जैसे राह देख रहे हैं कि यह कब मरेंगे··· (हस देती है)

बीच में ही मोहन कमरे में आ जाता है। हाथ पीछे करके दरवाजा बंद करता है और दरवाजे के पास ही खड़ा रहता है। जब मिस मैसी हंसने लगती है तो वह उसके पास आता है।

मिस मैंसी : मुझे छोड़िये मोहन बाबू, मुझे मालूम है, मुझे मालूम है मोहन बाबू···।

> मोहन बलात्कार करने की कोशिश करता है और ज़ोर के 'उफ' मेज़ पर सिर
> मिस मैंसी कपड़े झाड़कर होती है।

मिस मैंसी : (क्रोध से) बस्स। मैं कह रही हूं कि मुझे मालूम है। तुम्हारे सारे परिवार का इलाज हमारे नर्सिंग होम में ही हुआ है। समझे !

मोहन : (पेट पकड़कर तकलीफ से) उफ्-उफ्···।

मिस मैंसी : मुझे आप पर दया आती है मोहन बाबू। पिछली ने आपको इतना मारा था कि बेहोश हालत में अस्पताल में भरती किया गया था। आयम सारी टु आप बेकार हो गये हैं। उस जगह इतनी बेंत पड़ी हैं आपको··· (मिस मैंसी क्रास बनाती हैं और जाने लगती हैं) पुअर बाय। ···गाड ब्लेस यू।

> मोहन बेहद तकलीफ सहित वहां से हटता है और सोफे पर आ जाता है।

मोहन : उफ्···। संभालो इसे, इसको संभालो (अपना सिर पकड़े कमरे में घूमता है।) लगता है यह गिर जाएगा !··· इसमें इतना वजन कहां से आ गया। यह गिरेगा तो मैं खुद कुचल जाऊंगा···।

> तकलीफ सहित सोफे पर बैठ जाता है, बिमा अंदर से आती है : आलमस्य, और डूबी हुई। मोहन एक तरफ से आकर दूसरी तरफ क्रास कर जाता है।
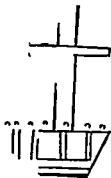
विभा : यह यहां नहीं वहां अच्छा रहेगा (**लंप शेड को कमरे के बीच में रखती है**) जब यह जलेगा ऐसा लगेगा जैसे कमरे के बीच मे रोशनी का पेड़ रखा हो और इसके नीचे जब शाम को हम बैठेंगे—सोहन, अमित और मैं तो यह हल्की-सी रोशनी हमारे चेहरो पर पड़ेगी ··(**प्लग हाथ में लेकर**) लेकिन इसे लगाया कहा जाये ? (**कुछ सोचकर**) मैं तो भूल ही गयी कि एक प्लाइट ओने पर भी है। ओना जैसे घर के भूगोल मे से ही गायब हो गया है। (**प्लग खिड़की से अंदर डाल देती है**) और अभी तो बहुत कुछ बदलना बाकी है (**कमरे का मुआयना करती है**) ये सब जब नये सिरे से जम जायेंगे ना तो एक मिनट के लिए अपने उसी पुराने अदाज में मैं यहा तक तैरूंगी···ऐसे-ऐसे···(**नृत्य के अंदाज में कमरे का चक्कर लगाती है**) लेकिन इसके साथ सगीत भी होना चाहिये, कई सारे रग आने-जाने चाहिए···और फिर प्याज के छौंक का बढ़िया पका हुआ खाना···। (**उंगलियां चाटती है।**)

सोहन अखबार में लिपटा पेंटिंग लिए आता है। उसके हाथ में कई सारे फूल है।

सोहन : हाय विभा··· (**उसे देखकर**) तुम तो एकदम ड्रीम गर्ल बनी हुई हो···।

विभा : कमाल है सोहन। मैं तब से कमरा बदल रही हूं लेकिन तुझे वह नही दिखाई दिया मैं दिखाई दे गयी···।

सोहन : (**देखकर**) वाह-वाह, लगता है किसी ड्रीम-सीक्वेन्स की शूटिंग होने वाली है···।

फूल मेज पर रख देता है।

विभा : (**पेंटिंग की तरफ देखकर**) लेकिन मेरा मूड ऑफ कर

मेज पर रखे फूल उसमें खोंस देता है…

सोहन : मेम साब, फूलदान…!

विभा उसे लेकर पास की मेज पर रख देती है…।

सोहन : और यह सोफा…?

दोनों मिलकर उसे खींचकर ठीक करते हैं।

सोहन : ओप्…बहुत भारी है। हटना मुश्किल !

विभा : और वह चारपाई ?

सोहन : (हंसकर) पहले ही खड़ी कर दी गयी है…

विभा : सच तो यह है कि चारपाई नहीं सारा घर ही हमने खड़ा कर दिया है।

सोहन : मैं अपने भाषण में कहा करता हूं कि व्यवस्था की चारपाई को हमें खड़ा कर देना है।

विभा : (हंसकर) और याद है आज का दिन ?

सोहन : हां, आज पूरा एक साल हो गया।

विभा : आज ही के दिन अपना जश्न कैंसिल हुआ था।

सोहन : आज ही के दिन हम नया साल मनाने की तैयारी कर रहे थे। तुमने कहा था रात के बारह तक जगेंगे…

विभा : और तुमने कहा था उस समय एकदम लाइट आफ कर देंगे, पापा खासकर कहेंगे—'फिर बिजली चली गयी क्या ?'

सोहन : और तुम एकदम लाइट आन करके कहोगी—'विश यू हैप्पी न्यू ईयर…'

विभा : मुझे नहीं पता कि हम उस समय पापा को विश कर भी पाते या नहीं। पापा डांटकर कह देते—'ठीक, ठीक है।

करते हैं और शाम को जो चंडूखाना बन जाता है। (पेंडिंग को ब्लू प्रिंट मानकर बतलाता है) और उसके पास यह रहा हाथी वाला मकान। सारे शहर में एक। पापा क्या कहा करते थे, 'पता नहीं किस वास्तुकला का प्रतीक।"

विभा (पापा की नकल) 'इसे बनाया अपने पिता के पिता के पिता ने। नक्शा भी उन्होंने बनाया था। नीचे बैठक, फिर जनाना, ऊपर दालान।' उसके पास आम के अचारों के मर्तबान रखने का कमरा और उसके ऊपर खुली छत, जहां चांद-वांद अपनी चांदनी-वांदनी फैलाया करता था और पापा अपना मलमल का कुर्ता पहनकर मुंह में दो बीड़े पान ठूसकर टहला करते थे। (थूकने का अभिनय करके) 'बात ये है।...'

सोहन : कहना यही है न कि इस पूरे घर को डिसमैंटल दिया जाये।

विभा अरे हटा भी। कारपोरेशन पीछे पड़ा है लेकिन वह हाथी तो हटवाया नहीं जा रहा।

सोहन : कभी हाथी को हटवा दिया गया तो इस गली का नाम क्या होगा फिर ? हाय हाथी। (रोने का अभिनय करके) रोना आ रहा है मुझे। हाय कित्ता बड़ा पेट कि हमारा कुनबा समा जाये उसमें। हाय कैसे बड़े-बड़े पैर कि हवेली झुक जाय उस पर। हाय कित्ता वजन कि तराजू टूट जाय।... हाय हाथी, कितना महान, कितना विशाल, कितना फालतू।

विभा : रोने के लिए बहुत वक्त पड़ा है सोहन। और मकान तुड़वाने चले हो भले आदमी, पहले यह छोटा-सा प्लग तो लगाकर दिखाओ।

सोहन : (चुटकी बजाकर) यह लो।...

मोहन [illegible] पर आता है…

मोहन [illegible] है। [illegible] आसपास [illegible] आता है। [illegible] रहे हैं… [illegible] पर थी। [illegible] [illegible] था [illegible] [illegible] था। [illegible] मिला।

अमित आता है। विभा अपने में डूबी है वह उसके पीछे आकर आँखें बंद करना चाहता है कि [illegible] जल उठता है।

अमित तो क्या मेरे आने से उजाला हो गया

विभा अच्छा तो बताइए अब आप फिलासफर से अब इलेक्ट्रिसिटी बनना चाहते हैं?

दोनों हँस देते हैं और मोहन जोर से सीटी बजाता आता है।

मोहन बड़ा मजेदार टाइमिंग है अमित। इधर रोशनी आई, उधर तुम आए।

अमित और मैं इधर रोशनी की तरफ बढ़ा उधर तुम आए…

विभा और उधर तुम आए और (**एकदम स्तब्ध हो जाती है।**)

मोहन क्या हो गया - ? भई हँसी के बीच में सहसा चुप हो जाना निहायत अशुभ लगता है

विभा एक अजीब डर अंदर समा गया है। पता है सहसा यह लगा है कि जिस क्षण हम जोर से हँस रहे होंगे, ठीक उसी क्षण यह मकान ढहकर गिर जाएगा।…ऐसा क्यों लगता है। जब बस में खड़ी होती हूँ तो लगता है सहसा एक इंजन डरकर पूरी स्पीड से आएगी और मुझे कुचल देगी…

अमित (विभा का सिर थपक देता है) और आज से तैयारी,

सेलीब्रेशन है क्या ?

सोहन : वाह, खुद ही सलाह देते हो और खुद ही भूल गये ।

अमित : फिर भी ?

सोहन : तो सुनो । आज हमारे यहां प्याज के छौंक की सब्जी बन रही है, रेडियो फुल पर बजनेवाला है और अमित अब खुसपुस बात करने की जरूरत नहीं, जोर से बोल सकते हो ।

विभा : मैंने फिजूल में मूड ऑफ कर दिया था अमित । आज सोहन साल गिरह सेलीब्रेट कर रहा है ।

सोहन : पहली सालगिरह है ।

अमित : क्या मतलब…?

सोहन : पापा आज ही के दिन साल भर पहले इस कुर्सी (चौंककर) ओह अब यहां नहीं है । आदत ऐसी पड़ गई जैसे कुर्सी अब भी यहां रखी हुई हो…

विभा : पहले वाक्य तो पूरा कर भले आदमी ।

सोहन : हां, मैं यह कह रहा था कि पापा आज ही के दिन साल भर पहले इस कुर्सी पर बैठे-बैठे ··

विभा : फिर वही । (जोर देकर) अब यहां कुर्सी नहीं है…

सोहन : यार, मुझे कुर्सी भूलनी हो नहीं क्योंकि मैं उस पर पैर रख कर अपनी चप्पल ठीक किया करता था ना । (हंस देता है ।)

अमित : यानी ?

सोहन : यानी पापा उस कुर्सी पर, जो यहां थी और अब हटा ली गई है, सहसा बीमार हो गये थे और उसी की आज साल-गिरह है ।

विभा : उस दिन अमित, हमारा जश्न कैन्सिल हो गया था । ऐसा लगता है जैसे हम ताली बजाने को थे और दोनों हथेलियां

सोहन : बस, रो दिये साले। इसी दम पर सारे वातावरण को बदलने चले थे।

अमित . यह रोना किस बात पर आया विभा ?

विभा इस लैंपशेड पर।

सोहन · लैंपशेड पर। यह तो जल रहा है। वाह क्या रोशनी है ।

विभा · मैंने सोचा था जब यह जलेगा इसकी रोशनी को देखकर ताली बजायेंगे।

अमित तो कौन-से मियाँ मर गये और रोशनी बुझ गई···

सोहन और अमित ताली बजा देते हैं।

विभा . (हल्के से हंस देती है) मुझे बुरा यह लगा अमित कि हम उत्सव मनाने की जब पूरी-पूरी तैयारी कर लेते हैं और मन से भी तैयार होते हैं तब हवा क्यों भारी हो जाती है। तब···

सोहन : मैं बताऊँ कारण···?

विभा उसकी तरफ देखती है।

क्योंकि हम प्याज नहीं खा रहे हैं। मैं अभी जाकर प्याज की पकौड़िया बनवाकर लाता हूं और देखना फिर, हवा हल्की हो जाएगी।

तीनों हसते हैं और सोहन सीटी बजाता बाहर चला जाता है।

अमित : विभा, (उसके कंधे पर हाथ रखकर) कल हम कोर्ट में चल रहे हैं और शादी के लिए नाम रजिस्टर करवा देंगे।

विभा · क्या इससे पहले···

अमित : इससे पहले कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं है। एक महीने के बाद तीन गवाह लेकर हम वहाँ जायेंगे और उसी शाम से साथ रहना शुरू कर देंगे।

विभा : लेकिन मुझे अपने घर···।

अमित : बैठो (दोनों बैठ जाते हैं) नजर बन, इन्तजार नाम की चीज कहानी-नाटक में बढ़िया लगती है क्योंकि उससे सस्पेन्स बनता है लेकिन जिन्दगी में उससे कुछ नहीं बनता। कल्पना करो विभा, जस्ट सपोज, कि तुम अपनी भरी जवानी को लिए पलकें मींच रही हो…

अमित . व्हाट् ?

अमित : यानी मान लो मैं नहीं हूं और तुम प्रतीक्षा कर रही हो कि कोई, कभी किसी तरह, कहीं से, कैसे भी, कभी न कभी,…

विभा : (उठ खड़ी होती है) अब बस भी करो…।

अमित : अगर तुम चेहरे पर बारह बजाकर बैठ जाओ और आंचल-वांचल गिराकर रोने लगो तो निहायत गंदी लगोगी…

विभा : हां, हम तो गंदे लगते हैं।

अमित : बैठ जाओ (बैठती है) तो अब किसी से कुछ नहीं कहना है और दबे पांव हल्के-हल्के एक क्षण इस…

विभा : अमित, मुझे लगता है हम एक चट्टान के नीचे दबे हुए हैं। उसमें से निकलना….

अमित : हो सकता है उस दबाव में से बाहर आने की कोशिश में हाथ-पैर टूट जायें लेकिन… (खड़ा हो जाता है) तुम किसे जरूरी समझती हो, बाहर आने को या सही-सलामत बाहर आने को ?

विभा . उत्तर दूं अमित ?

अमित : (उसकी तरफ देखता है) दो।

विभा : लगता है यह छत नीचे की तरफ झुक रही है…

अमित : (एक क्षण उसकी तरफ देखकर चलने को होता है) सुरा-

सोहम प्लेट बजाता हुआ आता है।

[illegible] (खाता है) खाओ ना।

विभा [illegible]

मोहन [illegible] होता है कि ट्रेन छूट जा रही है और कई बार [illegible] लगता है कि ट्रेन ही चली गई [illegible]

अमित ठीक मोहन।

मोहन और कई बार महसूस होता है कि [illegible] लगाऊँ—जा [illegible] जाती है या नहीं (ऊपर देखकर) होता यह है कि कई बार ट्रेन [illegible] चली जाती है और कई बार…

विभा कई बार ?

मोहन कई बार नहीं जाती (हँस देता है) और अमित (गंभीर होकर) शादी कब कर रहे हो ?

विभा क्या तुम हमारी बात सुन रहे थे ?

मोहन यानी तुम शादी की बात कर रही थीं ?

विभा नहीं तो· वो तो मैंने ऐसे ही कहा…

मोहन (चिढ़ाकर) ऐसे ही कहा। हाँ अमित, कब कर रहे हो शादी ?

अमित जरा नौकरी वगैरह मिल जाए।

मोहन यानी जिंदगी का ट्रेन समझते हो। (खाते हुए) लेकिन यह नहीं जानते कि ट्रेन छूटने का टाइम एकजैक्ट होता है।

टाइम एंड टाइम वेट्स फार नोबडी··· (हंसकर) अपने पिताजी का पेट प्रावर्ब था यह···।

विभा : सोहन, घर में मैं और किसीसे तो बात कर ही नहीं सकती, क्या तुमसे पूछूं ?

सोहन : मुझे दुख है कि अब तक नहीं पूछा (उसकी तरफ देखकर) और अब पूछने की भी जरूरत नहीं। अगर बब्बू अपना रास्ता नहीं खोजता तो तुम रोशनी के गिर्द, कीड़े पकड़ने के लिए चक्कर काटती हुई एक पूंछ और चार पैरों से दीवार पर रेंगनेवाली···

विभा : नहीं। तुम गंदी बात मत करो···(सोहन फिर बोलने को होता है कि विभा 'नहीं' कहकर रोक देती है !) वह सब दीदी होंगी, मैं नहीं हूं।

अमित : अरे, तुम इस हद तक कायर हो विभा। सोहन ने तो एक सिमिली दी है···।

विभा : प्लीज, नाम मत लेना उसका, मेरे रोंगटे खड़े हो जायेंगे···

अमित और सोहन जोर से हंस देते हैं।

अमित : लेकिन मेरे घर की दीवारों पर तो सिमिली ही सिमिली है।

सोहन : तो अमित शादी से पहले उन उपमाओं को हटवा देना··· हां तो क्या पूछ रही थी विभा ?

विभा : **(जो दरवाजे की तरफ खड़ी है)** अरे, भैया, आ गए !

सोहन और अमित बाहर की तरफ देखते हैं और हाथ में अटैची लिए मोहन आता है।

मोहन : **(अटैची हाथ से लेकर)** कमाल कर दिया। आप तो ऐसे गोल रहे कि न चिट्ठी न पत्री। क्या जमींदारी वापस पच-

की तरफ इशारा करके) खुली हुई जगह और यह नदी वाला पेंटिंग…

मोहन . अरे वाह ! यह अपना ही कमरा है क्या ? लगता है इसको तुमने साबुन से धो डाला।…और ये (एक पकौड़ी और उठाकर) मैंने वहां खूब खाया-पीया लेकिन प्याज जैसे ही सामने आता… (एकदम गंभीर होकर) क्या बात है विभा ?

विभा : (मोहन से) मैं भैया से कह दूं। वही बात जो तुमसे पूछ रही थी।…

मोहन : हां-हां जरूर पूछो। भैया अधिक हुआ तो नाराज हो लेंगे…

विभा : भैया से पूछ देवूं अमित ?

अमित 'जैसी इच्छा' का अभिनय करता है।

मोहन : मुझे तुम लोगों ने पत्र क्यों नहीं लिखा, तार क्यों नहीं दिया ?

विभा : इसमें तार-वार देने की क्या बात थी भैया…।

अमित : (कुछ सोचकर) भैया, कुछ गलत बात समझ रहे हैं शायद।

मोहन : मुझे इतना बेवकूफ समझते हो तुम अमित…।

अमित : जी नहीं, मेरा मतलब है…

मोहन : क्या मतलब मतलब लगा रखा है।

मोहन : तो आप क्या समझे। बतलाइये ना ?

मोहन . मैं गांव क्या गया कि समझ लिया, मोहन से छुट्टी मिली। बगीचन का दूसरा भाग तो तैयार हो गया है ना ?

…र चुकी है।…

…नी थी (सिर पकड़कर बैठ

मोहन : तुम बाहर के आदमी हो अमित, मैं तो अपने घर के लोगों से यह पूछना चाहता हूं कि मैं जब कमरे में आया···तो घुसते ही ऐसा क्या लगा जैसे पापा को मरे चार-पांच महीने हो चुके हैं···?

अमित पीछे-पीछे हटता बाहर जाने को होता है। चला जाता है।

विभा : लेकिन भैया कमरे को बदले चार महीने तो क्या चार घंटे भी नहीं हुए हैं। अभी जरा देर पहले पापा की कुर्सी उसी तरह आराम फरमा रही थी। अभी-अभी वह पीकदान यहीं बैठा था। अभी-अभी वह बकर घोल रही थी।

मोहन : तुम चुप रहो विभा। तुझे हर बात में गलती दिखाई देती है क्योंकि अमित तेरे सिर चढ़ा है···

विभा : आपका क्या मतलब है आखिर···?

मोहन : मैं जानना चाहता हूं कि तुम लोगों की हिम्मत कैसे हुई कि जब पापा जीवित हैं तो उन्हें मरा हुआ घोषित क्यों किया गया ?

सोहन : यह हमने घोषित नहीं किया भैया। हममें से कोई यह नहीं *सोचा। यह बात सबसे पहले आपकी जबान पर आई थी।*

मोहन : क्यों विभा ?

विभा गुस्से से लेकर दौड़ का दिखावा करती है और अंदर चली जाती है तभी सुधा सीढ़ियां उतरती दिखाई देती है।

मोहन : मैं इतने दिनों बाद उस गांव में फिर लौटकर आ रहा हूं और तुम हो कि मुझसे झगड़ रहे हो।

मोहन : जैसे वे एक-एक करके गये, वैसे ही मैं भी चला जाऊं ?

मोहन : मैं समझता हूं तू कोई बात न करेगा···

शुभा : सोहन।

सोहन : मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मेरे भाषण के बीच मे विरोधी लोग शोर मचायेंगे और हो सकता है वे मुझे बोलने भी नही देंगे।

मोहन : यह क्या बोल रहे हो तुम ?

सोहन : इसलिए मैंने और मेरे दोस्तो ने जो तय किया है वह कम-से-कम शब्दों में मैं तुम्हे बतला देना चाहता हू कि जोर-जुलुम की सरकार न चली है न चल ही सकती है। यह विश्वविद्यालय हमारा है और हम आज से अपनी मागों के लिए वी० सी० महोदय के दरवाजे पर धरना दे रहे हैं··· (पैर उठाता है) अरे—मेरा पैर ही सो गया। यह पैर कैसे सो गया। शायद चीटी चढ गई है।

मोहन : ये तुम सोहन—।

सोहन : पैर सो गया सो चुप हो गया हू—

शुभा : मैं पूछ सकती हूं यह सब क्या है ?

सोहन : जाहिर है, यह मेरा भाषण है, आज रात ८ बजे, होस्टल के सामने, गुलमोहर के पेड के नीचे, लैंपपोस्ट से एक फर्लांग दूर, इतनी तेज आवाज मे कि···

शुभा : वहां तुम पढ़ने जाते हो ?

सोहन : मुझसे भी किसीने पूछा था कि तुम अपने घर में रहते हो या नहीं ?

शुभा : 'या' क्या ?

मोहन : आप मानेंगी नही, यही आप पर भी लागू होता है।

मोहन : सोहन तुम्हें अगर भाषण ही देना है तो यहां से जा सकते हो···।

शुभा : (सिर पर हाथ रख लेती है) मुझे पता ही नहीं चल रहा है कि यह घर आखिर जा कहां रहा है।

तीसरा हाथी ○

: और तुम—

इसी बीच मोहन नाक के बालों में व्यस्त हो जाता है, पास से वह शीशा उठा लेता है।

तुम्हारी नाक के बाल बढ़े जा रहे हैं—

शुभा उठ जाती है। ऊपर की तरफ जाने को होती है।

मोहन : आखिर तुम चाहती क्या हो ?

शुभा : अब मुझे क्या चाहना है। (फीकी हंसी) वह वसीयत ले बैठो और उसे पापा के जीते-जी चील-कौव्वों की तरह नोच लो—। मैं इन कागजों को भी सभालकर नहीं रखना चाहती। अभी ला देती हूं वसीयत का दूसरा भाग।

शुभा ऊपर जाने को होती है। मोहन तेज-तेज कदमों से बाहर निकल जाता है। जाते-जाते अपना शीशा भी उठा ले जाता है। प्रकाश धीमा होता है। शुभा जीने से ही लौटकर अंदर के कमरे की तरफ बढ़ती है।

शुभा : वह कौन-सा साल था, कौन-सा महीना था, कौन-सी तारीख थी, उस समय घड़ी में कितना बज रहा था ?... कुछ याद नहीं, लेकिन वह कुछ था जरूर, जहां से यह घर दो, दो से चार, चार से आठ हिस्सों में बटने लगा।

शुभा कमरे के अंदर चली जाती है और तभी शुभा-विभा दोनों एक जैसी साड़ी पहने एक साथ आती हैं।

शुभा-विभा : पापा हमें पुकार रहे हैं : शुभा-विभा, शुभा-विभा। (मुड़कर) आई पापा, आई। अरे आप, खड़े हैं। कहां गई पापा

[illegible]

[illegible]

शुभा विभा [illegible]।

दोनों उन्हें बधाई का अभिनय करती है और आसपास बढ़ जाती हैं।

शुभा विभा [illegible]

शुभा विभा [illegible] ... जाती।

शुभा विभा [illegible] ... ही।

शुभा विभा [illegible] ... ती ... ती।

शुभा विभा [illegible] ... ही।

शुभा विभा [illegible] ... गया।

पान देकर दोनो हसती हैं।

शुभा विभा पापा हम दोनों अपने नम्बर बदलना चाहती हैं। पापा हम न नम्बर बदल ले क्या? (दोनो उठ खड़ी होती है एक दूसरी की तरफ देखकर) पापा नाराज दिखाई देते है। उन्हे नम्बर दिखाना तो भूल ही गयी। चल फिर से चलती हैं।

दोनो फिर पापा के पास आती हैं।

शुभा हमारे चालीस परसेंट नम्बर आये हैं पापा। (विभा चुप खड़ी है) तू क्यो नही बोलती?

विभा जो तेरे नम्बर हैं व मेरे नम्बर नही हैं। पापा, मेरे पैंसठ प्रतिशत नम्बर हैं।

शुभा इसका क्या मतलब हुआ? मैं तुमसे बड़ी हू।

विभा लेकिन हम दोनो के नाम अलग-अलग है।

: पापा फिर पुकार रहे हैं, शुभा-विभा, शुभा-विभा।

शुभा तेजी से आगे बढ़ती है।

शुभा : आओ ना, पापा बुला रहे हैं।

विभा : मेरा नाम केवल विभा है। वे आपको बुला रहे हैं।

शुभा : तू पापा के खिलाफ सोचती है ?

विभा : अपने पक्ष मे सोचना पापा के खिलाफ सोचना नही है।

दोनों एक दूसरी से दूर हो जाती है। शुभा कुर्सी के पास जाकर लौटती है।

शुभा : पापा पूछ रहे थे तू उनसे मिलने नही गयी ?

विभा : मैं पढ़ रही थी और पापा के सामने जाते मुझे अजीब-सी शर्म लगती है।

शुभा · पापा से किस बात की शर्म ?

विभा · मेरे और आपके शरीर मे अंतर है, इसी से आपको शर्म नही लगती मुझे लगती है।

शुभा और विभा मंच के दो अलग छोर पर खड़ी हो जाती हे।

शुभा (प्रकाश विभा पर पड़ रहा है।) मैं सोच भी नही सकती कि यह इस विभा के शरीर को क्या हुआ है। इतने अधिक कैसे बढ़ गये, और मैं ? छि गदी बात है यह, पापा देखेंगे तो क्या कहेंगे। (आवाज सुनकर) आई पापा आई··· **(कुर्सी के पास झुककर खड़ी होती है और बालों में गठान लगाती हुई पापा से बात करने का अभिनय करती है।)**

विभा . **(अब प्रकाश शुभा पर है)** मैं सोच भी नहीं सकती कि दीदी को यह क्या हो गया है, मुझसे उम्र में इतनी बड़ी हैं और इन्हें ब्रा की जरूरत भी नहीं होती। उफ् किस तरह बालों मे गठान लगाने लगी है। इस निर्ममता से तो

शुभा : मैं अभी पापा से जाकर कहती हूं।

विभा : क्या पापा पापा लगा रखा है दीदी। पापा को अपना काम करने दो।

शुभा : क्या मतलब है तेरा···?

विभा : आप क्यों पूछ रही हैं?

शुभा : मुझे पापा ने कहा है कि तुम पर और सब पर नजर रखूं।

विभा : इसीलिए तो पढ़ना छोड़ दिया है ना कि हम पर जासूसी करती रहो। दीदी आप बड़ी होंगी उम्र में लेकिन···

शुभा : क्या लेकिन (गुस्से में उसके पास जाती है) बताना होगा कि तू जा कहां रही है?

विभा : जाओ नहीं बतलाती और जो बने सो कर लो।

शुभा : तो पापा से कहती जा।

विभा : मैं कोई डरती हूं पापा से।

> प्रकाश कम होता जाता है। विभा और शुभा जीने के दरवाजे पर एक दूसरी के सामने हैं। एक कोई ऊपर चली जाती है और दूसरी पीठ किये जीने के दरवाजे पर खड़ी है।
>
> प्रकाश धीरे-धीरे लौटता है, अमित तेजी से कमरे में आता है।

अमित : क्या बात है विभा, आज दीदी-स्टाइल में साड़ी क्यों पहनी है? खैर, कारण जो भी हो। देखो, मैं दुबारा नहीं आता लेकिन आना पड़ा कि कल की बात पक्की कर ली जाये। (टहलता है) सवेरे तुम्हारे मोहन भाई साहब का जो व्यवहार देखा और शुभा दीदी का···खैर छोड़ो, कहना यह है विभा कि अगर तुम यहां और रहीं तो देख लेना किसी दिन वाकई यह छत सिर पर आ गिरेगी और पता नहीं

पर। पापा पापा ये सब लोग मजाक कर रहे हैं। यह घर गया कहाँ ... हो गया है पापा। **(बैठ जाती है और एकदम हँसती है।** बड़ा गया शीशा। शीशा बड़ा गया। मैं अपनी शक्ल देखूँ कि आखिर इस पर ऐसी कौन-सी काई जम गयी है। लेकिन शीशे में तो कुछ नहीं दिखता। इतने में मोहन नाक के बाल काट रहा है। पता नहीं क्या उसकी नाक की मक्खी इतनी ज्यादा हो रही है। पापा-पापा **(कुर्सी के पास आती है।** पान लगा दें आपके लिए पापा ? पान में अपनी मर्जी लगा दूँ पापा **(पान को चूमकर पापा को देती है)।** पान मीठा है ना पापा मीठा है ना पापा। **(उठकर गाने लगती है)** पान खाए पापा हमारो। मखमल का कुरता और टोप लालालाल पान खाए पापा हमारे··· **(डरकर पीछे हटती है)।** यह किसकी छाया है यह किसकी छाया है ? पीछे नहीं हटे तो मैं बंदूक से मार दूँगी। यह तुमने चेहरे पर नकाब क्यों लगा रखा है। क्यों लगा रखा है नकाब। हटाओ अपना नकाब। **(फिर ज़ोर से हँसती है)** नहीं मानते। मानते क्यों नहीं तुम **(पीछे हटती है और सोफे पर गिर जाती है)** मुझे गिरा क्यों रहे हो तुम। छोड़ते क्यों नहीं मुझे। क्यों नहीं छोड़ते···। यह मेरी साड़ी क्यों खींच रहे हो। छोड़ो मुझे बचाओ ना पापा तुम क्यों नहीं बचाते। मुझे तुम खा रहे हो। क्यों खा रहे हो मुझे ? नहीं यहाँ हाथ मत लगाओ। नहीं लगाओ हाथ। पापा नाराज होंगे। यह क्या तुम क्या कर रहे हो। क्या कर रहे हो मेरा तुम। **(उठती है और आधी गिरी साड़ी को सम्हालती है)** पापा पापा **(उठकर सीढ़ियों की तरफ जाती है)** मैं कैसे बचाऊँ अपने आपको। कैसे बचाऊँ अपने आपको **(चीखती है)।** फिर से किसी ने मेरे साथ। **(एक-**

कर) कौन हो तुम ? तुम्हारी शक्ल तो मैं पहचानती हूं पापा। लेकिन इस बार मुझे पता भी नहीं कि वह कौन था। यू हेव रेप्ड मी··· (वह जीने की तरफ बढ़ती है और चीख के बाद उसके गिरने की आवाज सुनाई देती है। दरवाजे पर गिरी हुई शाल चमकती रहती है) यू हेव रेप्ड मी अमित।···

प्रकाश पहले अंक की तरह ही धुंधला हो जाता है। मोहन कमरे में आता है। आश्चर्य से देखता है कि कुर्सी रखी है।

मोहन : (कुर्सी का मुआयना करता है) वही आराम कुर्सी जिस पर पापा बैठते थे। और··· (नजर पीकदान पर जाती है) पापा के पीक में से फूल खिल आये क्या ? कमाल है।

सहसा बजर एक बार बजता है।

मोहन : (बजर की तरफ देखकर) अब आराम मिला। कैसा अट-पटा लग रहा था बिना कुर्सी, और बजर की आवाज के। अब कमरे में अंधेरा-सा है, एक डर घिरा हुआ है। अब मैं कह सकता हूं कि पापा जिंदा हैं।··· (जेब से सिगरेट निकालता है) मैं जब आया तब यही सब होता तो मुझे यह शक ही नहीं होता··· (फिर बजर बजती है, सिगरेट वापिस रख लेता है।) क्या बात है, शुभा नहीं है क्या···।

उठकर दरवाजे पर आता है। शुभा को वहां गिरा देखकर घबराता है।

: हे राम। दीदी को फिर दौरा पड़ गया। अब यह दौरा अपने आप ही पड़ने लगा है क्या ? (रैक में से स्मेलिंग साल्ट लेकर अंदर जाता है) शुभा, शुभा···उठो, उठो शुभा, पापा बुला रहे हैं।

बधाई दे रहा है।

शुभा : (अब मोहन और शुभा की आफ-साउंड आवाज सुनाई देना बंद हो जाती है।) फिर वही। वह चोट … वही प्रताप वही गाना और वही फिल्मी गीत की पापा वाली धुन। (टहलती है।) जिस दिन मैं शीशे में अपने हाथ पर खड़ी हुई उसी दिन दूर भाग गया था। (लैंप शेड के पास जाती है।) कितना मनहूस लैंप शेड है। कितना मनहूस पेंटिंग है (हाथ ऊंचा करती है) यह क्या हुआ ? (दूसरे हाथ से पहला हाथ नीचे करती है) ऐसा लगा जैसे यह हाथ ऊपर उठकर अकड़ गया है और कभी नीचे ही नहीं आयेगा …। (हाथ को दो तीन बार ऊपर-नीचे करती है) ओह … अब

ठीक है…

मिस मैसी आती है और विभा को अपने में खोये देखकर ठिठकती है। वह उसकी तरफ देखती है।

मिस मैसी : क्या बात है विभा। मैं तुम्हें इस घर की सबसे जिंदा लड़की मानती रही हूं लेकिन धीरे-धीरे…(उसके पास आकर) यह हाथ ऐसे क्यों हिला रही है।

विभा : (हाथ को हिलाकर) अजीब भ्रम हो रहा था सिस्टर कि हाथ जैसे ऊपर से नीचे ही नहीं आएगा।

मिस मैसी हंस देती है।

मिस मैसी : कहीं पापा की छांह तो नहीं पड़ गयी।

विभा : शायद सिस्टर। क्या ऐसा होता है?

मिस मैसी : (जाती हुई) मालूम नहीं। यह तो छांह में रहने वाले पर डिपेंड करता है।

विभा : रुकिये सिस्टर। इसका उत्तर कोई बाहर वाला ही दे सकता है कि यहां की छांह कितनी काली है।

मिस मैसी : शायद मैं उत्तर दे सकती हूं लेकिन वैसा समय तो आये, जब बे-साख्ता कोई बात जबान से छूट जाये।

विभा : लेकिन जिस घर का नाम दूर से सुनाई पड़े, जो बहुत दूर से दिखाई दे उसके अंदर रहते हुए भी मैं उसे क्यों नहीं पहचान पा रही हूं?

मिस मैसी : कहा तो मैंने उत्तर मिल जाएगा।…

मिस मैसी ऊपर चली जाती है। विभा चेयर-टेबल के पास आकर खड़ी हो जाती है।

विभा : मालूम नहीं कि कौन-सी छांह इस घर पर पड़ रही है। कहीं यह तो नहीं हो रहा है कि पापा के सोये हुए हाथ-पांव

समय पर सो जाये या हाथ सो जाये (विभा ऊपर उठे हाथ को नीचे करती है) तो अच्छा यह होगा कि उस पर एक पत्थर गिरा लो…उस चोट से सोया पैर जग जाएगा।

जीने पर शुभा और मोहन दिखाई देते हैं।

विभा : तो मुझे क्या करना चाहिये ?

अमित : घर से बाहर आ जाओ।

विभा : कब ?

अमित : बाहर आने का कोई मुहूर्त नहीं होता।

शुभा हाथ में कुछ कागज लिए दरवाजे पर आ जाती है।

शुभा : अमित। इस घर मे मुहूर्त होता है और न मालूम हो तो मैं बतला देना चाहती हूँ कि हर शरीफ-घर मे मुहूर्त होता है।

मोहन : (सामने आकर) वाह अमित। मुझे नहीं पता था कि तुम्हारे इरादे इतने नेक हैं। शुभा बेहोशी की हालत में तुम्हारा नाम बड़बड़ा रही थी। और उससे अभी पता चला कि तुम उसे उल्टी-सीधी सुनाकर गए थे।

अमित : मैंने केवल सीधी बात कही है, उल्टी नहीं।

मोहन उसकी तरफ बढ़ता है।

मोहन : क्या कहना चाहते हो आखिर ?

अमित : यानी आप बात नहीं करना चाहते, हाथापाई करना चाहते हैं ?

मोहन : हां-हां। अगर ठीक रास्ता समझ मे नहीं आया तो…

मोहन उस पर झपटता है और शुभा रोक देती है।

शुभा : इसकी जरूरत नहीं है मोहन। अमित समझ लेगा। (हाथ

सोहन · वे ही जो दरवाजे पर नोटिस चिपका गये थे।

शुभा : अब क्या होगा ?

मोहन एकदम दरवाजे की तरफ बढ़-कर उसे बंद करता है।

मोहन . (बाहर सुनाकर) चले जाओ। चले जाओ यहा से तुम। उसे तुम इस तरह नही गिरा सकते।

दरवाजा बजाया जाता है।

शुभा : अब क्या किया जाये ? उसे किसी भी शर्त पर बचाना है मोहन। हम उसे इस तरह टूटने नही देंगे। अगर जरूरत हो मोहन तो इन लोगों को कुछ दे दे दो।

मोहन : वह सब हम कर चुके हैं शुभा।

मोहन जाकर दरवाजा बंद करता है।

शुभा : लेकिन अब क्या किया जा सकता है (**बेचैन होकर कमरे में टहलती है**) जरा पापा के बारे मे तो सोचो मोहन। अगर यह गिर गया तो क्या सोचेंगे वे। हमारे पुरखो ने इसे बनाया था।

सोहन . पता नही दीदी अच्छे-भले घर के ऊपर इस हाथी का क्या मतलब है। वह बारादरी होती या राम झरोखा होता तब भी बात समझ मे आती लेकिन हाथी ?

शुभा : जानते हो इस गली का नाम उस हाथी के नाम पर हाथी-वालान है।—

सोहन : तो क्या हुआ ?

शुभा : किसी जमाने मे जो भी शहर मे आते थे उन्हें हमारे घर का पता बताने की जरूरत नहीं होती थी। रेल से जो भी उतरता था उसे इतने सारे मकानो के बीच मे उत्तर की तरफ सबसे ऊपर हमारा हाथी एकदम दीख जाता था।

सोहन : हाथी। वह भी छत के ऊपर खूब ऊंची मीनार बनाकर

विभा धीमे कदमों से अपनी मेज की
तरफ बढ़ती है।

मोहन . (बाहर सुनाकर) अजीब लोग हैं आप। क्यों हमारा दरवाजा पीट रहे हैं ? फिर आइये, यह कोई वक्त है शरीफों के घर आने का।

फिर दरवाजा बजता है।

मोहन : मोहन। वह सोफा इधर खींचो और दरवाजे पर लगा दो। कहीं ये अहमक दरवाजा ही न तोड़ दें।

सोहन और शुभा सोफे को दरवाजे
की तरफ खींचते हैं ''।

सोहन : सोफा यहां लगा तो रहा हू दीदी। लेकिन इससे कुछ नहीं होगा। क्यों नहीं हम उन्हें अंदर आ जाने देते ''।

शुभा : तुम चुप रहो सोहन।

फोन की घंटी बजती है। सौटकर
विभा फोन उठाती है।

विभा (फोन में) नहीं अमित, नहीं। अभी यहां दरवाजा बंद है। मैं मानती हूं कि बाहर आने का मुहूर्त नहीं होता लेकिन जब दरवाजा ही बंद हो—। नहीं, बाहर जाने के लिए इस घर में कोई और दरवाजा नहीं है।

फोन रख देती है और अपनी मेज
की तरफ धंसी जाती है। दरवाजा
। बाहर से पीटा जा रहा है।
र गूंजती है।
।। यहां की आवाजें उन तक
। जाएंगे।
सोफा
बाद
। दर-

तीसरा हाथी
रमेश बक्षी
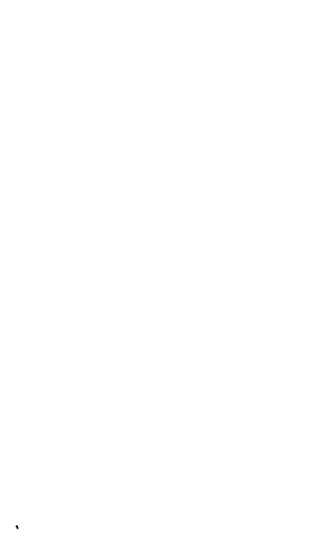
बेर के पेड़ के लिए

—जो था

१८८

— नारको

रमेश बक्षी
आवेश टेरेस थिएटर
यू-११, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-११००१६

फोन ६१६५८४

प्रस्तुति के बारे में

स्थान के बारे में मेरे निर्देश एक तरह की लिस्ट है, नक्शा नहीं। लिस्ट के अनुसार रंगमंच पर सारी चीज़ें इकट्ठा करने की जरूरत भी नहीं है। स्थान के निर्देश मैंने हटाये इसलिए नहीं हैं कि निर्देशक को 'प्रस्तुत' में से चीज़ें हटाने की सुविधा खुद मिले। जो अनिवार्य हैं, वह है जीना, पीकदान, पापा की कुर्सी और बज़र। जीने, पीकदान और कुर्सी से पापा की शक्ल बनती है, बज़र से उनको ध्वनि दी गई है। ध्वनि और प्रकाश के खेल में जैसे प्रस्तुतकर्ता प्रस्तुत में ध्वनि की सहायता से अपने मंच का आरोप के माध्यम से निर्माण करता है, वही इसमें भी अपेक्षित है। मेरा विशेष आग्रह प्रकाश-व्यवस्था पर है, कभी वह बंद कमरे का अंधेरा है तो कभी प्रकाशित प्रसन्नता का स्वरूप। ध्वनि, वह बज़र की हो, फोन की हो या दरवाज़ा बजाये जाने की या कुदाली चलने की—सब पात्र हैं। उन्हें ठीक से संयोजित किये बगैर यह नाटक अपना अपेक्षित प्रभाव नहीं दे सकता।

पूर्व-दीप्ति को मैंने वर्तमान से एकदम जोड़ दिया है, उसे स्मृति के रूप में नहीं, इस तरह दिखाया जाये जैसे अभी-अभी यह घटना हुई है। जो अनुपस्थित है वह उपस्थित से अधिक घर पर छाया हुआ है जो उपस्थित है वह इतना अधिक रीढ़हीन है या आकारहीन, कि अनुपस्थित-सा लगता है।

क्लाइमेक्स कथा-रचना का अनुगम्य ही नहीं है जीवन का संयोग भी है, मैंने उसे संयोग के रूप में सामने रखा है, यानी वहां यथार्थ ज्यादा सबल है, मेरे कलाकार होने की तुलना में।

रंगमंच यथार्थ से दूर जितना कल्पनाशील होगा, मेरा विश्वास है वह उतना ही अधिक प्रभावशाली लगेगा।

नाटक को अलग-अलग अंकों में बांटने, बार-बार डिम आउट के निर्देश देने और लगातार दृश्य के बीच समय-सूचक संकेत देने में मेरा विश्वास नहीं है इसलिए प्रकाश, संगीत या एंट्री का क्षणिक व्यवधान भी
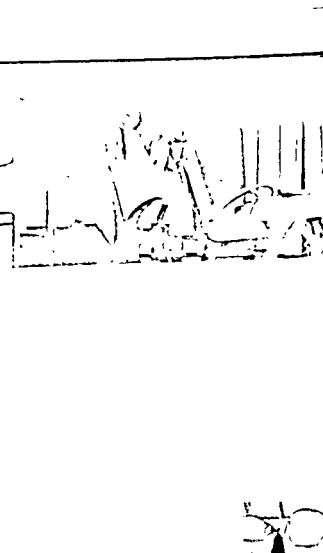
पात्र

शुभा : सबसे बड़ी लड़की, उम्र ३० के लगभग। चेहरे पर घोर थकान, जैसे-तैसे पहनी गई साड़ी, गले में रुद्राक्ष और सारे शरीर पर [illegible]।

मोहन : पूरा नाम मोहनलाल शर्मा, उम्र २८ के लगभग। बीमार चेहरा।

रोशन* : उम्र २५ के लगभग। आर्मी-आफिसर।

विभा : शुभा की छोटी बहन, मॉड कपड़े, चेहरे पर रोशनी, साफ जबान।

सोहन : विभा से छोटा, उम्र २० के करीब। दाढ़ी और क्रांतिकारी लुक।

अमित : उम्र २५, विभा का दोस्त

मिस मैंसी : नर्स।

*रोशन का अभिनय सोहन ही करेगा

स्थान

श्री मुरारीलाल शर्मा का घर। बीच में ए[illegible], दीवार से सटा दवाइयों का रैक। दाए—बाहर खुलनेवाला दरवाजा। बाएँ—एक चारपाई, उसके पास राइटिंग टेबिल, उधर ही कहीं किचन है, बाथरूम है। सामने—अन्दर जाने का रास्ता, वहां सीढ़ियाँ हैं जिनसे चढ़कर पापा के कमरे में जाया जाता है, बीच में एक खिड़की है उसमें जानेवाले की सिलहूटी नजर आती है। दरवाजे पर एक बजर है। उसका बजना, सुनने के साथ ही देखा भी जा सकता है। *ठीक सामने एक आराम*-कुर्सी है, [illegible] रखा है एक पीकदान। मंच पर प्रमुख हैं ऊपर जाने वाला [illegible] आराम-कुर्सी और पीकदान। बाकी सब किसी भी [illegible] हैं।

'तीसरा हाथी' २९-३० नवंबर १९७४ को नाट्य समिति जानकीदेवी महाविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा पहली बार प्रस्तुत किया गया। इसी क्रम में इसे १०, ११, १२ दिसंबर १९७४ को 'नादिरा' द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में भी खेला गया।

पात्र

शुभा	नीलम भाटिया
मोहन	वेद प्रकाश
विभा	रजनी
मोहन और मगन	हरि राजदान
मिस मैरी	कंचन मेहता
अमित	विनय बरुआ

मंच

प्रस्तुति : वी. के. सरीन

सज्जा : एम. के. रैना

प्रकाश : शुभा राव

मंच-व्यवस्था : वाणी सुब्बन्ना

स्मारिका-मुखपृष्ठ : सुशील बनर्जी

पुस्तक-मुखपृष्ठ : ज्योतिष दत्तगुप्त

मेक-अप : मालिनी शुक्ला

संयोजन-सामग्री : कुसुम जोशी

सभागृह-व्यवस्था : सुखजीत प्रभाकर मल्होत्रा

प्रचार : शर्मा पुरी गिरिजा मेंसा

विशेष आभार : डा. श्रीमती जैन प्रिंसीपल ज. दे. म.

वाद्य-आशीष : मेहता शुक्ला अग्रवाल

निर्देशन : एम. के. रैना

(प्रस्तुति स्वर्गीय अवतार कौल को समर्पित

रहते हुए जैसे घर में न हों कैद में हों। **(खांसता है और जेब से सिगरेट निकालता है)** मैं बाथरूम में सिगरेट पीते-पीते थक गया हूं। हमेशा पापा सिर पर बैठे रहते थे सो कभी घर में सिगरेट नहीं जला पाया **(सिगरेट मुंह से लगाता है)** लेकिन अब, मेरा ख्याल है चलाना चाहिए, वे उठकर आने से तो रहे। **(आराम कुर्सी पर बैठना चाहता है कि एकदम अलग हो जाता है)** क्या डर समा गया है कि अगर कुर्सी पर बैठ गया तो एकदम बजर मेरी कनपटी पर धनधनाने लगेगी। **(डरते हुए सिगरेट जलाता है)** पीयो यार मोहनलाल वल्द मुरारीलाल शर्मा। साल्ले डरते-डरते ये हाल हो गया। राम जाने क्या होगा इस घर का। पता ही नहीं चलता कि यह गाड़ी जा कहां रही है। **(खिड़की में से ऊपर झांकता है, चेहरे पर रौनक आ जाती है)** अभी आयी नहीं है, अभी कहां बजा नौ ? नौ से पहले कभी नहीं आती। **(गुंडे अंदाज में एक कश खींचता है)** अभी-अभी मुझे लगा कि इसी समय वह घटना हुई है। लगा, जैसे पापा अपनी कुर्सी पर बैठे हैं और पान थूककर मुझे पुकारा है—'मोना बेटे' और जैसे चीख निकल गयी है, पापा कुर्सी पर लुढ़क गये हैं। शुभा ने दौड़कर फोन किया है, डाक्टर आया है और पता लगा है कि पापा को लकवा मार गया है, आधा शरीर सुन्न है। जबान लड़खड़ाने लगी है, खाली एक पैर और एक हाथ हिलता है। साथ ही रक्तचाप। उस क्षण के बाद पापा को कुछ नहीं मालूम कि दुनिया चल रही है या नहीं। वे समझते होंगे जिस क्षण उनका शरीर सुन्न हुआ, उसी क्षण सारी दुनिया स्टाप हो गयी। फिर पापा को ऊपर ले जाकर उनके कमरे में बड़े बिस्तर पर सुला दिया गया और सात दिन बाद पहचान

जाती कि आप उत्तेजित न हो जायें लेकिन मैं बतला देता हूं पापा : देश में मिडटर्म इलेक्शन हो चुके हैं, बागला देश आजाद हो चुका है और वो जो आपको पद्मश्री दिलवाने वाले मिनिस्टर थे ना, सब स्त्री हो गये। अब वे फिर से चरखा कातने लगे हैं। समझे, समझे ना····। (पीकदान से टकराता है) तो गुरु तुम अब भी यहीं धरे हो (पीकदान को उठाकर उसमें थूकता है) पापा जबसे बीमार हुए हैं किसी ने थूका नहीं होगा ना, स्रो (पीकदान रख देता है) लेकिन तुम्हारे दिन फिरने वाले हैं मिस्टर पीकदान अब। अरे, नहीं, पापा का सुमधुर पीक तो पता नहीं अब नसीब हो या न हो लेकिन मोहन भाई साहब की खांसी रंग ला रही है, काफी जोर से खांसने लगे हैं। तुममें अपना कफ नहीं थूकते क्या ? करते होंगे। यह घर भी मजेदार है, साले पीकदान को भी बाप का ओहदा मिला हुआ है। (बजर अब बार बार बजती है) वाह क्या आवाज है, क्या स्वर चढ़ाया है, क्या बोल है, क्या आरोह-अवरोह है, वाह क्या कहने राग पिलाप्पी के। बजो, अपनी मारी औलाद के कान में बजो···। मुझे नहीं पता कि इस बार बार के क्या अर्थ होते हैं। (हाथ जोड़कर) अपने से तो पिताजी आपकी जबान की आवाज ही नहीं समझी जाती थी अब यह गूंगी आवाज क्या समझ में आयेगी। यह तो शुभा दीदी ही है जो आपकी टेलिग्राफिक आवाज को सुनकर वसीयत के पन्ने रंग सकती है। मैं गरीब आदमी हूं। दूर से ही प्रणाम करता हूं। (आरामकुर्सी पर बैठने को होता है कि आते हुए मोहन की ओर से आवाज सुनायी देती है—)

मोहन : बेहतर है यह भइया कि कुछ दिन आप सैनेटोरियम में रह लीजिए।

मोहन : तुम मुझे घर से निकालने पर तुले हो।

मोहन : मैं तो इसलिए कह रहा था कि वहां का वातावरण बढ़िया होता है—सफेद सुंदर चादरें, डिटोल की भीनी-भीनी महक, खांसी की तरह-तरह की आवाजें और एक से एक बढ़िया मर्ज…।

मोहन : क्या कहा, मर्ज आ गई क्या ? (उठकर खिड़की में से झांकता है)

सोहन लैंप जलाता-बुझाता है।

सोहन : (स्वगत) इन्हें लगता होगा मर्ज यहां भी तो है फिर वहां जाने की ज़हमत कौन उठाये।

मोहन : (लौटकर) कुछ कह रहा था तू ?

सोहन : कह नहीं रहा था, पूछ रहा था।

मोहन : क्या ?

सोहन : यह हाथ में क्या लिए हैं ? कहीं से चिट्ठी आयी है या वसीयत का कोई पन्ना है।

मोहन : अरे यही तो परेशानी का कारण है। सोचा जरा देर बाहर बैठूं तो यह नोटिस आ गया।

सोहन : नोटिस ? (सोहन मोहन के हाथ से कागज लेकर पढ़ता है।)

मोहन : अब क्या किया जाये ?

सोहन : (उसे पढ़ लेने पर) इसमें परेशानी की क्या बात है। दो मजदूर लगवाइये और उसे हटा दीजिए…।

मोहन : इसे आसान काम समझता है ? वह तो हमारे पुरखों की नाक है। पापा इसे सुनेंगे तो…

सोहन : तो फिर रुक जाइये कुछ दिन। कारपोरेशन वाले आकर

सोहन : बेहतर है यह भइया कि कुछ दिन आप सेनेटोरियम में रह लीजिए।

मोहन : तुम मुझे घर से निकालने पर तुले हो।

सोहन : मैं तो इसलिए कह रहा था कि वहां का वातावरण बढ़िया होता है—सफेद सुंदर चादरें, डिटोल की भीनी-भीनी महक, खासी की तरह-तरह की आवाजें और एक से एक बढ़िया नर्सें…।

मोहन : क्या कहा, नर्स आ गई क्या ? (उठकर खिड़की में से झांकता है)

सोहन लैंप जलाता-बुझाता है।

सोहन : (स्वगत) इन्हें लगता होगा नर्स यहां भी तो है फिर वहां जाने की जहमत कौन उठाये।

मोहन : (लौटकर) कुछ कह रहा था तू ?

सोहन : कह नहीं रहा था, पूछ रहा था।

मोहन : क्या ?

सोहन : यह हाथ में क्या लिए हैं ? कहीं से चिट्ठी आयी है या वसीयत का कोई पन्ना है।

मोहन : अरे यही तो परेशानी का कारण है। सोचा जरा देर बाहर बैठू तो यह नोटिस आ गया।

सोहन : नोटिस ? (सोहन मोहन के हाथ से कागज लेकर पढ़ता है।)

मोहन : अब क्या किया जाये ?

सोहन : (उसे पढ़ लेने पर) इसमें परेशानी की क्या बात है। दो मजदूर लगवाइये और उसे हटा दीजिए…।

मोहन : इसे आसान काम समझता है ? वह तो हमारे पुरखों की नाक है। पापा इसे सुनेंगे तो…

सोहन : तो फिर रुक जाइये कुछ दिन। कारपोरेशन वाले आकर